Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X Pg. 243-248

बुद्धधम्म: पारिवारीक संघर्ष का समाधान

महानागरत्न विष्णू जुमडे
पीएचडी संशोधक, पालि-प्राकृत विभाग, रा.तु.म.ना.वि. नागपूर
प्रो. डॉ. मोहन वानखडे
मार्गदर्शक, पालि प्राकृत विभाग प्रमुख
डॉ. आंबेडकर कॉलेज, दीक्षाभूमी, नागपूर

Accepted: 22/08/2025
Published: 29/08/2025 *DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.17060694*

सारांश

व्यक्ति शारिरीक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर हमेशा दु:खमुक्त रहना चाहता है| हर व्यक्ति का जन्म परिवार में होता है| वह आगे चलकर अपना परिवार बनाता है| जन्म से लेकर मृत्यू तक पुरा जीवन वह परिवार से जुडा रहता है| परिवार में रहकर वह संस्कारीत होता है, संस्कृती और सभ्यता को सिखता है| सामाजिक संस्थाओ में परिवार सबसे छोटी और सार्वभौम संस्था है| पारिवारीक रचना और कार्य मे स्थल, काल एवं संस्कृती के आधार पर भिन्नता दिखाई देती है| इस संस्था के अपने नियम होते है| ये नियम घर के बडे लोग, धर्म, परंपरा या देश का कानुन तय करता है| परिवार के हर सदस्य को नीजी जीवन जीने की स्वतंत्रता रहती रहती है, लेकीन इस स्वतंत्रता को जब दुसरे कोई सदस्यद्वारा छिना जाता है या कोई अपनी स्वतंत्रता का स्वच्छंदी ढंग से इस्तेमाल करता है तब पारिवारीक संघर्ष का निर्माण होता है| परिवार का हर सदस्य एक दुसरे से स्वतंत्रता, समानता, प्यार, सहचर्य और विश्वास की चाह रखता है, यही परिवार की नींव होती है| परिवार में लगातार बदलाव आते रहते है| कुछ सालों पहले पारिवारीक जीवन खेती से जुडा हुआ था, उस समय लोग साथ में रहते थे| एक दुसरे के काम में हाथ बटाते थे| सुख दु:ख मे साथ निभाते थे| जैसे ही औद्योगिक क्रांती में बढोतरी हुई, शिक्षा और रोजगार का स्वरूप बदल गया, इससे परिवार विभक्त होने सुरू हुए| पारिवारीक प्यार, सहचर्य और विश्वास की नींव कमजोर पडने लगी| रिस्तों से जादा जरूरतों की पुत को अहमियत प्राप्त होने लगी| व्यक्ति की सुख की परिभाषा आध्यात्मिकता से हटकर भौतिक होती गई क्योंकि भौतिक सुख सुविधा की उपलब्धता दुनिया में बढ गई है| इसका परिणाम आपसी मतभेद, रिस्तों में दरार और पारिवारीक संघर्ष के रूप में दिखने लगा है| भौतिक सुख सुविधायें बदलनेवाली होती है, उसे प्राप्त करने के लिए हरदम प्रयास जारी रहता है| व्यक्ति की जरूरतों का, इच्छाओं का, महत्वकांक्षाओ का कोई अंत नही| इस अंतहिन चलनेवाली धारा को कहा रोक लगानी है, कहा नियंत्रण लाना है यह बात जब समज में आती नही तो पारिवारीक संघर्ष बढने लगता है| पती-पत्नी में संघर्ष, माता-पिता और बच्चो में संघर्ष, सांस-बहु में संघर्ष, घरेलु हिंसा, स्त्री-भ्रुण हत्या, ससुराल से चीजों की मांग करना, मानसिक उत्पीडन ऐसे अनेको संघर्षोका अनुभव परिवार में आता है| परिवार में चल रहा संघर्ष और उससे आनेवाली मानसिक पिडा एक मानव समस्या है| इस बात को ध्यान में रखते हुए भगवान बुद्ध का धम्म उसका समाधान कर सकता है, यह बात सामने आती है| इस समस्या का समाधान बुद्धधम्म में खोजना इस शोध-निबंध का उद्देश है| इस उद्देश की पुत के लिए भगवान बुद्ध के सुत्तो का अध्ययन करके उसके माध्यम से इस समस्या का समाधान खोजना, यह इस शोध निबंध की शोध-पद्धती रहेगी| दुनिया में आये बदलाव के कारण मनुष्य की सोच और परिवार बदल गये है| इस आधुनिकता के वातावरण में भगवान बुद्ध का धम्म आज के व्यक्तिगत और पारिवारीक जीवन में समाधान ला सकता है, यही इस शोध निबंध का निष्कर्ष है|

मुख्य शब्द : *व्यक्ति, परिवार, पारिवारीक संघर्ष, बुद्धधम्म, समाधान*

प्राक्कथन

मानवनिर्मित सामाजिक संस्थाओं में परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था है| दुनिया की सबसे ज्यादा जनसंख्या परिवार में रहती है| परिवार दुनिया भर में फैली हुई और सार्वत्रिक सामाजिक संस्था है| व्यक्ति के सामाजिकरण की भूमिका यह संस्था निभाती है| व्यक्ति परिवार में जन्म लेता है, बढता है, कारोबार करता है और मर जाता है इसलिए अपने परिवार से हर व्यक्ति का लगाव रहता है| वह पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक कर्तव्य और जिम्मेदारीयोंका स्विकार कर उसे पुरा करने का प्रयास करते रहता है| सुरक्षा, सुविधा और वंश को आगे बढाने के लिए परिवार का निर्माण एवं विकास हुआ है| परिवार के निर्माण एवं विकास का अपना इतिहास है| इस में बहुपत्नीत्व, बहुपतीत्व और एकपत्नीत्व का प्रावधान है| आधुनिक समय में समलैंगिक और अंशकालिन वैवाहिक संबंधो को भी अनुमती मिल रही है|

परिवार कैसा भी हो उसका आधार विवाह होता है| वैवाहिक संबंधोसे ही परिवार बनता है लेकिन उस में व्यक्ति की भूमिका अहम होती है, मुख्य होती है| परिवार के कार्यो में गडबडी आने से वहाँ संघर्ष पैदा होता है| व्यक्तिगत एवं पारिवारीक संघर्ष के चलते, व्यक्तिगत एवं पारिवारीक सुख-चैन खत्म हो जाता है इसलिए व्यक्तिगत एवं पारिवारीक संघर्ष का समाधान करने के लिए भगवान बुद्ध का धम्म अंगिकृत किया जा सकता है|

व्यक्ति और पारिवारीक सम्बन्ध

हर एक व्यक्ति और घटना स्वतंत्र एवं विशेष होती है| फिर भी लोग और घटनाओं में कुछ समानता होती है| जब हम व्यक्ति के बारे में सोचते है तब उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व और व्यक्तिगत भिन्नता की बात सामने आती है| व्यक्ति और व्यक्तिगत भिन्नता को समजने के लिए भगवान बुद्ध के कुछ सुत्तों का संदर्भ दिया जा सकता है|

इस शरीर में कोई अहं (आत्मतत्व) न होने के कारण पुद्गल (व्यक्ति) नामक ऐसी कोई स्वतंत्र, स्थायी और नित्य बात विद्यमान नही है| इस सच को जताते हुए पू. नागसेन भिक्षु कहते है -

ईषा (दण्ड), अक्ष, चक्के, रस्सियाँ इत्यादी रथ के अवयवों के आधार पर केवल व्यवहार के लिये रथ ऐसा कहा गया है| इसी तरह ये केस, लोम, नाखून, दन्त इत्यादी अवयवों के आधार पर (बने शरीर को) केवल व्यवहार के लिये नागसेन ऐसा नाम दिया गया है, किन्तु परमर्थ में नागसेन ऐसा कोई पुद्गल (व्यक्ति) विद्यमान नही है|[1]

पुद्गलनैरात्म्य को दर्शाते हुए विमलकिर्तिनिर्देश सुत्र में कहा है - यह (महाभूतों से बना) शरीर अनेक धर्मों का संग्रह (संनिपात) है, जब यह उत्पन्न होता है तो धर्म ही उत्पन्न होते है, जब यह निरूद्ध होता है तो धर्म ही निरूद्ध होते है| इन धर्मों को न एक दुसरे का ज्ञान है और न इनमें एक दुसरे की वेदना ही है| जब वे उत्पन्न होते है तो **मै उत्पन्न हूँ** ऐसा नही सोचते है, जब वे निरुद्ध होते है तो **मै निरुद्ध हूँ** ऐसा भी नही सोचते है|[2] परमर्थ में कोई पुद्गल (सत्व) नही है लेकिन लोक व्यवहार करने के लिये मैने किया, उसने किया ऐसा कहा जाता है| इसी के आधार पर पुण्यकर्म और पापकर्म के परिणाम प्रशंसा, उपहार और निंदा, दंड के रूप में सामाजिक संस्था एवं न्याय व्यवस्था में देखे जा सकते है| भगवान के समय किसी एक ब्राह्मण ने भगवान से कहा - भंते| हम मानते है की, यहा खुद कुछ करनेवाला (**अत्तकारो**) नही है, न दुसरा कुछ करनेवाला (**परकारो**) है| यह सुन भगवान ने उससे कहा - क्या मानते हो ब्राह्मण, कोई किसी कार्य को आरंभ करता है, उसे पुरा करने का प्रयास करता है, मेहनत करता है, कार्य करते समय रूकता है, खडा रहता है, फिर से कार्य में लग जाता है?

हाँ भंते! कार्य करनेवाला देखा जाता है|

कार्य है इसलिये कार्य करनेवाला भी होता है| इसी अर्थ में खुद करता है, दुसरा भी करता है, ऐसा कहा जाता है|[3] कर्ताभाव और भोक्ताभाव आत्मतत्व को ख्याल में रखकर नही कहा गया है बल्कि कार्य करने और उसके परिणाम लाने के प्रयास (उपक्रम) को देखकर कहा गया है| यह लोक व्यवहार में उपयोग में आनेवाली बातें होती है|

व्यक्ति, स्त्री, पुरूष, पुद्गल, सत्व नामक संज्ञाए लोक व्यवहार करने के लिए उपयोग में लायी जाती है| जिस धर्म को वह धारण करता है उसका वैसाही व्यक्तित्व रहता है| इससे स्पष्ट होता है की, व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके गुण, अवगुण और कर्म से पहचाना जाता है|

व्यक्तित्व शरीर के साथ जुडा रहने से उसके आधारभूत तत्वों का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार में दिखाई देता है| शरीरधर्मो के आधार पर मनुष्य का व्यवहार चलता है| मनुष्य का विकास वास्तव में शरीरधर्मो की जरूरतो को पुरा करने की व्यवस्था है| समय के साथ इसमें जटिलता आयी है लेकीन मूल प्रेरणा तो वही है| इस बात को समजने के लिये धनियगोप के संवाद को समजना होगा| धनिय सुत्त में धनियगोप कहता है -

> भात पक चुका है, हमने दुध दुह लिया है, अपने परिजनों के साथ महीनदी के किनारे निवास करता हूँ, कुटी अच्छी तरह छायी हुई है, आग जल रही है। हे देव! यदि तुम चाहते हो तो बरसो|
>
> डँस यहा नही है, कछार में उगी घासों को गौवें चरती है, आई वर्षा को भी सह लेगी|
>
> मेरी ग्वालिन आज्ञाकारिणी और चंचलता रहित है, वह दीर्घकाल से प्रेम से मिलजूल कर रहती है, मै उसके किसी भी प्रकार के पाप को नही सुनता हूँ|
>
> मै स्वयं कमाकर खाता हूँ, मेरे पुत्र भी अनुकूल और नीरोग है, मै उनके किसी पाप को नही सुनता|
>
> मेरे पास बछडे है, दुधारू गायें है, गाभिन और तरूण गायें भी है, गायों का पति सांड भी है|
>
> अचल खूँटे गडे है, मूँज की नई बनाई गई रस्सियाँ है, उन्हे तरूण बछडे भी नही तोड सकते है|[4]

धनियगोप के संवाद से उसका व्यक्तिगत एवं पारिवारीक जीवन झलकता है| वह परिवार, उपजीविका और स्वयं के व्यक्तिगत सुख की भावना से परे नही है| धनियगोप का जीवन कृषी से जुडा हुआ है लेकिन आज के मानव का

जीवन सूचना और प्रौधोगिकी जैसे जटील कार्यो से जुडा हुआ है| फिर भी उसका व्यक्तिगत और पारिवारीक जीवन धनियगोप जैसा ही है| उसे पारिवारीक चिंताएँ है, वह उससे मुक्त रहना चाहता है| उसकी उपजीविका, भार्या और बच्चे निर्दोष है इसलिये वह भयमुक्त दिखाई देता है लेकिन अगर ऐसा नही होता तो उसका पारिवारीक जीवन दु:ख और कलहपूर्ण दिखाई दे सकता था| जैसे धनियगोप और उसकी भार्या बुद्धधम्म का पालन कर दु:ख से मुक्त हुए वैसे ही आज का मानव भी दु:ख और कलह से मुक्त हो सकता है|

परिवार का ढांचा अलग अलग हो सकता है| इस में संस्कृति, आर्थिक परिस्थिती और जगह का विशेष महत्व होता है| Maclever ने परिवार के कार्यो को दो भागो में वर्गिकृत किया है - 1. परिवार के आवश्यक कार्य : पती पत्नी के लैंगिक संबंध, बच्चे को जन्म देना और उनको बढाना; घर में रहनेवाले बुढे, छोटे बच्चे और रोगी की देखभाल करना; घर चलाने के लिये काम करना, पैसा कमाना; परिवार के लोग बच्चे को जीने के तौर तरीके सिखाते है, उनका सामाजिकरण करते है| 2. परिवार के गौण कार्य: पैसा कमाना, बचत, खर्चा, दान कर्म आदी आर्थिक व्यवहार करना; संपत्ती की सुरक्षा और हस्तांतरन करना; धार्मिक कार्य; शैक्षणिक कार्य; अन्य परिवारो से मेलजोल बढाना, उनके घरों में किसी विशेष अवसर पर आना जाना और उन्हे अपने घर में बुलाना आदी; परिवार में रहनेवाले सदस्यों की आकांक्षा, सपने और विशेष गुणो को पूरा करने के लिये प्रयास करना, अवसर देना, मदत करना आदी कार्यो का समावेश होता है|[5] व्यक्ति, उसके पारिवारीक संबंध और कार्यो के बारे में आयी जानकारी यहाँ इस शोधनिबंध की दृष्टि से पर्याप्त है| व्यक्तिगत सोच, बोलना या बर्ताव अगर गलत हो, पारिवारीक संबंधो में अनबन हो और पारिवारीक कार्यो में लापरवाई हो तो परिवार में संघर्ष का माहौल पैदा होता है, बढता है और परिवार बिखर जाता है|

व्यक्तिगत और पारिवारीक संघर्ष

व्यक्तिगत और पारिवारीक संघर्ष का संबंध व्यक्तिगत शोक, दुर्व्यवहार और कलह से है| व्यक्तिगत सोच, दृष्टिकोन और व्यवहार का प्रभाव परिवार के सदस्योंपर होता है| संघर्ष के कारणों को स्पष्ट करने के लिये यह बुद्धवचन उपयोगी सिद्ध हो सकता है|

> कामभोगों के प्रति आसक्ति के कारण, कामभोगों के जाल में फँसे होने के कारण, कामभोगों के कीचड में धँसे होने के कारण, कामभोगों के गर्त में गडे होने के कारण हे ब्राह्मण! क्षत्रिय भी क्षत्रियों के साथ विवाद करते है, ब्राह्मण भी ब्राह्मणों के साथ विवाद करते है, गृहपति भी गृहपतियों के साथ विवाद करते है|
>
> दृष्टि (मिथ्या मत विशेष) के प्रति आसक्ति के कारण, दृष्टि के जाल में फँसे होने के कारण, दृष्टि के कीचड में धँसे होने के कारण, दृष्टि के गर्त में गडे होने के कारण हे ब्राह्मण! श्रमण भी श्रमणों के साथ विवाद करते है|[6]

कामभोगों के प्रति आसक्ति रखना यह एक अकुशल मानसिकता है क्योंकि इस का परिणाम बुरा होता है| इसका आधार हमेशा वस्तू, सेवा, सुख-सुविधा या व्यक्ति होता है| कोई भी आसक्ति निराधार नही होती| निचे दी गयी दो गाथाओं से इस बात को ठिक से समज सकते है|

> जो मनुष्य खेती-बारी, वस्तु, सोना, गौ, घोडा, दास-दासी, स्त्री (पत्नी) और बन्धु संबंधी अनेक प्रकार के भोग विलास में फँस जाता है| तो उसे वासनायें दबाती है और परेशानीयाँ मर्दन करती है| जैसे फुटी हुई नौका में पानी घुस जाता है, वैसे ही उसके पीछे दु:ख हो लेता है|[7]

इस तथ्य को रखते हुए भगवान ने कामनाओं को वस्तु कामना (इच्छा) और क्लेश कामना के तौर पर वर्गिकृत किया है| वस्तु कामना का अर्थ है - मनोनुकूल, आकर्षक रूप, शब्द, गंध, रस एवं स्पर्श; बिस्तर की चादर, कंबल, दासदासी, भेडबकरी, मुर्गामुग, सुअर, हाथी, गाय, बैल, खेतीबाडी, उपभोग्य तथा उपयोगी वस्तु, सोनाचांदी, रूपया, गाव, निगम, राजधानी, राष्ट्र, जनपद, कोश, कोशागार और जो कोई भी मनोनुकूल आकर्षक चीजें (व्यक्ति, जगह) है वह सब वस्तु कामना है| जो इन कामभोगों में कामच्छंद, कामराग, कामतृष्णा आदी है उसे ही क्लेष कामना कहा गया है|[8] वस्तु को प्राप्त करने के संकल्प से, इच्छा से ही कामना जगती है और उसे पुरा करने का प्रयास होता है| इसलिए गाथाओं में कहा गया है

> यदि भोग विलास की इच्छा करने वाले की इच्छा पूरी हो जाती है, तो वह व्यक्ति अवश्य ही अपनी इच्छा पूरी होने से प्रसन्न मन होता है| यदि इच्छा करने वाले तृष्णा के वशीभूत उस व्यक्ति की वे कामभोग की चीजें नष्ट हो जाती है, तो वह तीर चुभने की भाँति पीडित होता है|[9]

मनोनुकूल, आकर्षक रूप, शब्द, गंध, रस एवं स्पर्श यह चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिव्हा और काया के उपभोग्य विषय कहे गये है| उपभोग के कारण ही उसके प्रति आसक्ति आती है| जसै, टेलिव्हिजन एक दृकश्राव्य उपभोग्य वस्तु है| होमथिएटर संगित सुनाने वाली उपभोग्य वस्तु है| विभिन्न प्रकार के परफ्यूमस्, विभिन्न प्रकार के खाद्य भोज्य पदार्थ, कपडे, बिछौना, सोफा आदी वस्तुएँ गंध, रस और स्पर्श को अनुभव कराते है| इंद्रियों से भोगे जानेवाले चीजों से जो लगाव होता है, उसका दूर जाना, तुटना, फुटना, न मिलना, मिलकर बिछडना मन में दु:ख और शोक को पैदा करता है| ऐसा किसी घर के सदस्य के माध्यम से होता है तो घर में संघर्ष पैदा हो जाता है| यह संघर्ष तात्कालिन हो सकता है या इसका स्वरूप गंभीर भी हो सकता है| हर एक व्यक्ति का जीवन चीजों के साथ, व्यक्तियों के साथ, जगह के साथ जुडा होता है क्योंकि इसी से जीवन चलता है| इन के व्यवहार में सुविधा, मित्रता और संयम रहता है तब घर में कोई संघर्ष नही होता| जब ऐसा नही हो पाता तब संघर्ष की गुंजाईष ज्यादा रहती है| इस में लढाई झगडा, मारना काटना, मनमुटाव, घर छोडना, रिस्ता छोड देना आदी बातें हो सकती है| इसलिए वस्तुकामना और उससे जुडी हुई क्लेशकामना संघर्ष को पैदा करनेवाली एवं बढानेवाली बात होती है|

संघर्ष का दुसरा कारण दृष्टि (मत विशेष) के प्रति आसक्ति भी है| व्यक्ति इंद्रियों के माध्यम से जीन जीन विषयों को स्पर्श करता है, या अनुभव करता है, या उसके बारे में

सोचता है, या दुसरों के बताने से, प्रचलित मान्यता से सिखता है, या खुद सोच विचार कर मत बनाता है उसी के आधार पर (मिथ्या) दृष्टि, अहंभाव का विकास होता है| घर परिवार में कोई समस्या आती है, या कोई कार्य करना होता है, किसी की कोई इच्छा होती है तब उसके प्रति अपना नीजी मत हर कोई रखना चाहता है| कभी कभी बडों का आदर कर उनके मत को पूरा किया जाता है| जब किसी के मत को, इच्छा, कामना और विचार को ध्यान में नही लिया जाता, या हमेशा अनदेखा किया जाता है तब उसके मन में इस बात को लेकर नाराजगी आ जाती है| इसके विपरित घर में कोई अपना ही मत घर के अन्य सदस्यों पर दबाफुसलाकर थोपता रहता है, सब को अपना गुलाम समजता है तब भी इस बात को लेकर बाकीयों में नाराजगी आ जाती है| इसी से पारिवारीक संघर्ष पैदा होता है, बढता है और इस से परिवार बिखर जाता है|

कामभोग और दृष्टि के प्रति आसक्ति रखना संघर्ष का कारण होता है, यह यहा स्पष्ट होता है| भगवान कलह विवाद का कारण बताते हुए एक देवता से कहते है - कलह, विवाद, विलाप, शोक, कंजूषी, मान, अभिमान और चुगली प्रिय (मनोनुकूल विषय भोगों) से उत्पन्न होते है| कलह और विवाद कंजूषी (किसी को कुछ न देने की चाह) से युक्त है| विवाद उत्पन्न होने पर चुगली उत्पन्न होती है|[10]

व्यक्तिगत और पारिवारीक संघर्ष के कारणों को ठिक से समज लिया गया है|

व्यक्तिगत शोक, दु:ख, भय और पारिवारीक संघर्ष के अनेक कारण गिनाएँ जा सकते है लेकिन उनका मूल व्यक्ति की अकुशल चेतना या कोई प्रतिकूल परिस्थिती रहती है| प्रतिकूल परिस्थिती से आनेवाला दु:ख और संघर्ष उसके गुजरते ही कम होता है, खत्म हो जाता है| लेकिन अकुशल चेतना से, जानबुझकर दुसरों का नुकसान करने की चेतना से आनेवाला दु:ख और संघर्ष नष्ट होने पर भी उसकी स्मृति (याद) हमेशा परिवार में अलगाव, अनबन और संघर्ष को बनाये रखती है| मन मे एक दुसरे के प्रति रहनेवाला आदर, प्यार और विश्वास इससे नष्ट हो जाता है| पारिवारीक संघर्षों के कारण पारिवारीक जिम्मेवारी को पूरा नही करना भी हो सकते है| यह परिवार के हिसाब से विभिन्न और कम ज्यादा हो सकते है|

व्यक्तिगत एवं पारिवारीक दु:ख और संघर्ष (वैर) में पंचशील का भंग करने की अहम् भूमिका होती है| 1. हिंसा का संबंध जीवन से है| 2. चोरी का संबंध संपत्ती या उपभोग्य वस्तु से है| 3. व्यभिचार का संबंध पती पत्नी के आपसी प्यार, विश्वास और विचारशीलता से है इसमें यौन संबंधो की अहम् भूमिका होती है| 4. झुठ बोलने का संबंध सच्चाई से होता है और 5. नशीली वस्तुओं के सेवन का संबंध स्मृति, सजगता से होता है| इस पंचशील का भंग करना केवल पारिवारीक संघर्ष नही लाता बल्कि सामाजिक हानि भी करता है इसलिए इसे कानुनी अपराध भी माना जाता है|

व्यक्तिगत और पारिवारीक संघर्ष का समाधान

व्यक्तिगत जीवन में शारिरीक, वाचिक और मानसिक दुराचरण, अज्ञान एवं तृष्णा से ही दु:ख का उत्पाद होता है| शारिरीक दुराचरण शारिरीक सदाचरण से, वाचिक दुराचरण वाचिक सदाचरण से और मानसिक दुराचरण प्रज्ञा के माध्यम से दूर किया जाता है, ऐसा भगवान ने कहा है|[11] व्यक्तिगत सुधार को ख्याल में रखकर भगवान बुद्ध ने प्रज्ञा, शील और समाधि का उपदेश दिया है| व्यक्ति पारिवारीक है, उसकी पारिवारीक जिम्मेवारी होती है| परिवार में रहनेवाला हर एक सदस्य एक दुसरे से अच्छा बर्ताव, विचारशीलता और प्यार (विश्वास) की अभिलाषा रखता है| यह अभिलाषा व्यक्तिगत दुराचरण और परिस्थिती से जब पूरी नही हो पाती तब पारिवारीक संघर्ष पैदा होने की गुंजाईश रहती है| व्यक्तिगत जीवन में दुराचरण दूर करने के लिए शील का पालन करना जरूरी होता है| व्यक्तिगत और पारिवारीक संघर्ष में शीलों का भंग होने की भूमिका को पहले ही समजा जा चुका है|

पारिवारीक एकता और सुख-शांती में पती पत्नी की अहम् भूमिका होती है| उनके आपसी प्यार, विश्वास और विचारशीलता पर ही परिवार के रिस्ते बने रहते है| इसके विपरित होने से परिवार (रिस्ते) बिखर जाते है| भगवान ने पती पत्नी के सम्बन्ध में **पठम संवास सुत्त** में कहा है -

> जिस परिवार में पती पत्नी दोनो सुशील, मधुरभाषीणी, निरभिमानी, सम्यक आजीविकावाले, एक दुसरे के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार करनेवाले होते है तब उनका पारिवारीक जीवन सुखपूर्वक बितता है| ऐसे पती पत्नी, देव देवी के साथ संवास करते है, ऐसा कहा गया है|[12]

पती पत्नी का पारिवारीक जीवन सफल होने के लिए भगवान ने **पठम समजीवि सुत्त** में नकुलमाता और पिता को कहा था जब पती पत्नी समानशील, समानत्यागी और समानप्रज्ञ रहते है, तब वह एक दुसरे के साथ प्रेममय जीवन व्यतित करते है| वह दोनो एक दुसरे के प्रति स्नेह, उदारता, संयम और सदाचरण रखते है तब वह एक दुसरे के प्रति प्रियभाषी रहते है|[13]

परिवार सिर्फ प्यार, विश्वास और विचारशीलता से नही चलता| परिवार चलाने के लिए सम्यक आजीविका, पैसा कमाना, पैसों का व्यवहार करना भी अनिवार्य रूप से जरूरी है| आधुनिक समय में रोजगार का स्वरूप बदल गया है| महंगाई बढ गयी है और जीने का मानक बदल गया है| आर्थिक बदलाव कोई भी हो, लेकिन भगवान ने आर्थिक उन्नति के बारे में जो कहा है वह विचारनीय है| आजीविका से जीवन चलता है लेकिन भगवान ने **वणिज्जा सुत्त** में पाँच प्रकार के व्यापार को करने से मना किया है क्योंकि वह मानवता और जीवों को हानि पहुँचाते है| जैसे की, शस्त्रों का व्यापार, प्राणियों का व्यापार (इस में दास दासी, बच्चे, लडकीयों का व्यापार भी शामिल है|), मांसमच्छी का व्यापार, शराब एवं अन्य नशीली चीजों का व्यापार और जहर एवं जहर मिश्रित चीजों का व्यापार| इन पाच प्रकार के व्यापार को कभी नही करना चाहिए|[14]

जो कोई इन पाँच प्रकार के व्यापार का त्याग कर अच्छे धंदे में मेहनत और इमानदारीसे आजीविका कमाता है वह चार प्रकार के सुख को प्राप्त करता है| इस बारे में भगवान ने अनाथपिण्डिक गृहपति को कहा था गृहस्थो ने यथोचित समय में चार प्रकार के सुखों को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए| जसे की, 1. **अस्थिसुख** कोई कुलपूत्र कडी लगन, मेहनत और कुशलता से धन कमाता है| उस कमाएँ हुए

विद्यमान धन को देखकर वह सुखसौमनस्य अनुभव करता है, वह उसका अस्थिसुख है| 2. **भोग सुख** जब वह अपने उपरोक्त ढंग से कमाए धन से कामनाओं का उपभोग करता है, उस समय वह जो सुखसौमनस्य अनुभव करता है, वह उसका भोग सुख है| 3. **अऋण्य सुख** वह किसी से कम या ज्यादा धन उधार नही लेता| (लिया हुआ धन डुबाता नही|) मै ऋणरहित हुँ, ऐसा सोच वह जो सुखसौमनस्य अनुभव करता है, वह उसका अऋण्य सुख है| 4. **निर्दोष सुख** वह कायिक सदाचरण, वाचिक सदाचरण और मानसिक सदाचरण से युक्त होता है| अपने निर्दोष कर्म को जानकर वह जो सुखसौमनस्य अनुभव करता है, वह उसका निर्दोष सुख है| अस्थि सुख, भोग सुख, अऋण्य सुख से निर्दोष सुख श्रेष्ठ कहा गया है|[15]

इस उपदेश से स्पष्ट है की, संपत्ति से सुखसौमनस्य आता है| संपत्ति का अभाव रहने से घर में तंगी बनी रहती है और इससे घरेलु तणाव, संघर्ष और अनीति का व्यवहार पैदा हो सकता है| इसिलिए वह संपत्ति को नष्ट करनेवाले छ कारणों से दूर रहता है|

1. शराब या अन्य नशीली चीजों के सेवन से दूर रहता है| 2. असमय इधरउधर, रात में घुमने से दूर रहता है| 3. खेलतमाशा देखने के व्यसन से दूर रहता है| 4. जुआ खेलने के व्यसन से दूर रहता है| 5. पापी मित्रों की संगत करने से दूर रहता है| 6. शारिरीक और मानसिक आलस्य से दूर रहता है| इन व्यसन से संपत्ति खत्म हो जाती है|[16]

अमिर होना या गरीब रहना किसी के नसीब की बात नही| यह राजव्यवस्था की गलती होती है| जैसे की भगवान ने चक्कवति सुत्त में भिक्षुओं से कहा है भिक्षुओ! राजा के अधार्मिक होने से धन का अभाव होता है; धन के अभाव से दरिद्रता बढती है; दरिद्रता बढने से चोरी बढती है; चोरी बढने से लोग हथियार रखते है; हथियार रखने से हिंसाचार बढता है; हत्या के डस से लोग झुठ बोलने लगते है; झुठ बोलना बढने से चुगली बढती है; चुगली बढने से व्यभिचार बढता है; व्यभिचार बढने से कठोर बोलना और व्यर्थ बकवास यह दो धर्म बढ जाते है; ये दो (अकुशल) धर्म बढने से लोभद्वेष बढते है; लोभद्वेष से मिथ्यादृष्टि बढती है; मिथ्यादृष्टि बढने से अधार्मिकता, विषमलोभ (दुसरे के धन/स्त्री की चाह) और मिथ्याधर्म बढते है; यह तीन धर्म बढने से माता पिता, श्रमण ब्राह्मण, परिवार के जेष्ठ भ्राता बहन इनका सन्मान कम होने लगा; ये (अकुशल) धर्म बढने से मनुष्य की आयु कम होने लगी, उनका वर्णतेज कम हो गया...|[17] इस से स्पष्ट होता है की, दरिद्रता से ही दु:ख, गुलामी, संघर्ष और अनीति पनपती है| जीने के लिए धन की जरूरत होती है| धन का विनियोग ठिक से न होना भी पारिवारीक और सामाजिक संघर्ष की जड होती है इसलिए भगवान जो कहा है वह आज भी दिखाई देता है|

जिस तरह पारिवारीक जीवन में धन को महत्व है; उसी तरह आप्तमित्रों का भी महत्व होता है| अच्छे और बुरे मित्रों की पहचान होने से आनेवाली आपत्ति से बचा जा सकता है| इसिलिए भगवान ने महामङ्गल सुत्त में भी कहा है

मुर्खो के साथ न रहना, पंडितो के संग रहना, पूजनिय लोगो की पूजा (सेवा) करना, यही उत्तम मंगल है|[18]

बुरे मित्रों के संग रहने से बाद में पछताना पडता है, इस से दु:ख, परेशानी और आपसी संघर्ष बढते है इसलिए बुराई से बचने की हमेशा कोशिश करनी चाहिए|

पारिवारीक जीवन में पती पत्नी, आर्थिक कारोबार, मित्र रिस्तेदार का जैसा महत्व है वैसा ही घर में रहनेवाले बडे बुढे लोगो का भी महत्व होता है| आधुनिक समय में विभक्त परिवार के चलते घर में रहनेवाले बुढे माता पिता, सांस ससुर, दादा दादी, नाना नानी के देखभाल की समस्या पैदा हो गयी है| उनकी प्रॉपट के बटवारे को लेकर संघर्ष होता है| अपनी जिम्मेवारी दुसरो पर ढकेलने की कोशिश होते रहती है| ऐसी समस्या को सुलझाने के लिए भगवान ने एक बुढे गृहस्थ से निम्न कुछ गाथाएँ कण्ठस्थ करा ली|

> जैसे घोडा बुढा होने पर काम का नही रह जाता तो उसे भली भाँति घास भी नहीं डाला जाता| इसी तरह बालकों का पिता वृद्ध होने पर दूसरों के घरों में भिक्षा माँगता फिरता है|
>
> अब तो मेरे लिए यह लाठी ही एकमात्र आश्रय है, जिसके प्रति उसी के पुत्र नि:स्नेह हो गये है| इस लाठी से उन्मत्त साँड या कुत्ते को दूर भगाया जा सकता है|
>
> नगर की गलीयों में घोर अंधकार हो, या वर्षाकाल में गहरा किचड हो, इस लाठी के प्रताप से वहाँ ठोकर खा कर भी इसके सहारे से खडे ही रहेंगे, गिरेंगे नही|

इन गाथाओं को कण्ठस्थ कर लेने के बाद एक दिन ब्राह्मणपरिषद में सभा के बीच चारों पुत्रों को बैठे देख, उचित समय में ब्राह्मण ने यह गाथाएँ कही| गाथा को सुनने के बाद चारों पुत्रों को पच्छाताप हुआ| उन्होने पिता को घर ले जाकर उसकी अच्छे से देखभाल की| बुढा ब्राह्मण इससे शक्तिसंपन्न हुआ, तब वह भगवान से मिलने गया और भगवान को धन्यवाद देकर भोजन का निमंत्रण दिया| उस समय भगवान ने उन चारों पुत्रों और पुत्रवधुओं से कहा बुढे पिता की देखभाल कर तुम अपना ही कल्याण कर रहे हो| माता पिता की सेवा करना पुराने पंडितो ने भी पुत्र का कर्तव्य बताया है| यह उपदेश सुनकर पुत्र और पुत्रवधु धर्म में प्रतिष्ठापित हो गये|[19]

पारिवारीक जीवन सफल होने के लिए शिक्षा का होना जरूरी है|[20] रोजगार हेतु अकेडेमिक शिक्षा का महत्व है, वैसे ही आचरणशील बनने के लिए धम्म की शिक्षा जरूरी है| भिक्षु धर्मगूरू और अनुत्तर पुण्यक्षेत्र होते है| भिक्षुओं की सेवा करना, उन्हे दान देना, उन से धम्म को सुनना पुण्य बढाता है| धम्म का ज्ञान और कुशल आचरण रहा तो परिवार में सुख शांती आती है इसलिए धम्म की शिक्षा लेनी चाहिए| अपनी भौतिक उन्नति को ख्याल में रखकर माता पिता बच्चों को अकेडेमिक शिक्षा देते है; ऐसी ही आचरणशील व्यक्तित्व बनाने के लिए धम्म का ज्ञान देना भी अनिवार्यरूप से जरूरी होता है| इस से व्यक्तिगत और पारिवारीक संघर्ष खत्म होता है, उससे राहत मिलती है और उन्नति होती है|

व्यक्तिगत और पारिवारीक संघर्ष का समाधान करने के लिए उपरोक्त भगवान के बताए उपदेश उपयोगी सिद्ध हो सकते है|

उपसंहार

व्यक्तिगत और पारिवारीक जीवन सुखद दु:खद घटना, प्रसंग और परिस्थितीयों से जुडा रहता है| यह जीवन अस्थिर और परिवर्तनशील है| भावी जीवन अच्छा बनाना है तो भुतकाल में गलतीयाँ, गलतफहमीयाँ और विवाद हो चुके है, उस से कुछ शिख लेनी चाहिए| लेकिन लोग शिख लेने के बजाय दुसरों की खामियाँ निकालने और उनको गिनाने में ही धन्यता मानते रहते है| अपने कमजोर और गलत व्यक्तित्व को सुधारने के बजाय दुसरों को भला बुरा कहकर बात टालते रहते है, पारवारीक संघर्ष को मिटाने की कोशिश नही कर पाते| हर एक ने अपने नीजी और पारिवारीक जीवन का निरीक्षण करना चाहिए| इस से एक बात स्पष्ट हो जायेगी की, भगवान बुद्ध ने बताए गये तत्वों का कहीं ना कहीं पालन नही हो पाया है, या उसकी ओर ध्यान ही नही दिया गया है| यह बात सच है की, हर एक परिवार स्वतंत्र और विशेष परिस्थितीयों से घिरा हुआ रहता है| हर एक को अपनी समस्या का समाधान अपने तरीके से चाहिए होता है| अपने पक्ष में चाहिए होता है| अपने बडप्पन में चाहिए होता है| परिवार में कोई खुद को कम नही मानता| लेकिन परिवार में रहने वाले सदस्यों के मन में भगवान बुद्ध का उपदेश हो तो उनका नीजी और पारिवारीक जीवन कम संघर्षवाला रह सकता है| मनुष्य का स्वभाव अज्ञान और तृष्णा से ढँका रहता है और वह उसे खत्म करने की चाह भी नही रखता| उसे लगता है वह जो कुछ है, बराबर है| इसी सोच के कारण वह भगवान के उपदेशों को सिखता नही, उसका पालन करता नही इसलिए पारिवारीक संघर्षो को सुलझा पाना थोडा पेचिदा हो जाता है| जहाँ लोग धम्म की सुननेवाले होते है वहा दु:ख और संघर्ष कम होते है| धनियगोप और उसका परिवार बुद्ध की शरण में गये, धम्म का पालन करते थे इसलिए वह सारे पारिवारीक दु:ख से परे थे| इसी उदाहरण को याद में रखते हुए इस शोधनिबंध का यही निष्कर्ष है भगवान की शिक्षा आज के आधुनिक व्यक्ति और परिवार में चल रहे संघर्ष, तणाव और परेसानी को दूर करने में सहाय्यक हो सकती है|

संदर्भ ग्रंथ

1. मिलिंद प्रश्न, हिंदी अनु. द्वारीकादास शास्त्री, बौद्धभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1998, पृ. 34
2. विमलकिर्तिनिर्देश सुत्र (संस्कृत हिंदी), पीडीएफ, पृ. 257`
3. अङ्गुत्तर निकाय पालि, छक्क निपात, अत्तकारी सुत्त, वि.वि.वि. इगतपूरी, 1998, पृ. 53
4. सुत्तनिपात, धनियसुत्त, (पालि हिंदी), डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित, मोतिलाल बनारसिदास, दिल्ली, 2010, पृ. 7- 9
5. Marriage, Family and Kinship, Utkal University, Bhuvaneswar, India, pdf
6. अंगुत्तर निकाय, भाग 1, हिंदी अनु. विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी, 2005, पृ. 71
7. सुत्तनिपात, कामसुत्त, (पालि हिंदी), डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित, मोतिलाल बनारसिदास, दिल्ली, 2010, पृ. 207
8. चुळनिद्देसपालि, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी, 1998, पृ. 32
9. सुत्तनिपात, कामसुत्त, (पालि हिंदी), डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित, मोतिलाल बनारसिदास, दिल्ली, 2010, पृ. 207
10. तैत्रव, पृ. 229
11. अङ्गुत्तर निकाय पालि, दशकनिपात, कायसुत्त, विविवि, इगतपूरी, 1998, पृ. 34
12. अङ्गुत्तर निकाय पालि, चतुक्कनिपात, पठमसंवास सुत्त, विविवि, इगतपूरी, 1998, पृ. 66-67
13. तैत्रव, पठमसमजीवि सुत्त, पृ. 71
14. अङ्गुत्तर निकाय पालि, पञ्चकनिपात, वणिज्जा सुत्त, विविवि, इगतपूरी, 1998, पृ. 194
15. तैत्रव, चतुक्क निपात, आनण्य सुत्त, पृ. 80
16. दीघनिकाय पालि, सिगालोवाद सुत्त, विविवि, इगतपूरी, 1998, पृ. 138
17. दीघनिकाय पालि, चक्कवत्ति सुत्त, विविवि, इगतपूरी, 1998, पृ. 51- 52
18. खुद्दकपाठपालि, विविवि, इगतपूरी, 1998, पृ. 4
19. धम्मपद अट्ठकथा, भाग 4, हिंदी अनु. स्वामी द्वारीकादास शास्त्री, बौद्ध आकार ग्रंथमाला, वारणसी, 2000,
पृ. 1744- 45
20. दीघनिकाय पालि, सिगालोवाद सुत्त, विविवि, इगतपूरी, 1998, पृ. 145

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****